आर एल ए समाचार

आपकी आवाज़ आप तक

रामलाल आनंद महाविद्यालय, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | सत्र 2018–19 | पेज 1–4

स्पलेंडर 2019

कला और संस्कृति का अद्भुत संगम

तीन दिवसीय समारोह में विद्यार्थियों ने बिखेरी संस्कृति की छटा

आशुतोष मिश्रा

नई दिल्ली। "जब कला का विहंगम रूप देखना हो, संस्कृति की सरंचना को महसूस करना हो, तब एक मंच तैयार करना पड़ता है, जो सांस्कृतिक कला की विविधता को एक साथ लाकर उसे एक रूप दे सके, तब जाकर बिखरती है कला और संस्कृति की छटा।" कुछ ऐसा ही नज़ारा दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय के छात्रसंघ समिति की ओर से आयोजित वार्षिक उत्सव स्पलेंडर 2019 में देखने को मिला। इस आयोजन ने दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने का एक अवसर प्रदान किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहा करते थे कि 'परिचय से प्रेम बढ़ता है'। छात्रसंघ समिति ने इस कथन को सार्थक करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार महोत्सव का भव्य शुभारंभ नॉर्थ ईस्ट उत्सव को करने का निर्णय लिया। 14 फरवरी को आयोजित नॉर्थ ईस्ट उत्सव का उद्घाटन पूर्वोत्तर राज्य के सांसद डॉ. थोकचोम मेइन्या और महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता के गरिमामयी उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। उत्सव के दौरान नॉर्थईस्ट सोसाइटी के विद्यार्थियों ने त्रिपुरी लेबंग नृत्य, बसन्त रास, मणिपुरी पैत्रियोटिक गीत आदि कई कलात्मक प्रस्तुति के साथ पूर्वोत्तर राज्य की सामरिक संस्कृति की छटा बिखेरी और वहीं अनेकता में एकता का सन्देश दिया। महोत्सव के अगले सत्र में 'बैटल ऑफ बैंड प्रतियोगिता के साथ, बॉलीवुड गायिका आयुशी अरोरा की धमाकेदार प्रस्तुति ने समा बांध दिया तथा अंत मे डीजे नाइट ने छात्र–छात्राओं को थिरकने पर मजबूर कर दिया।

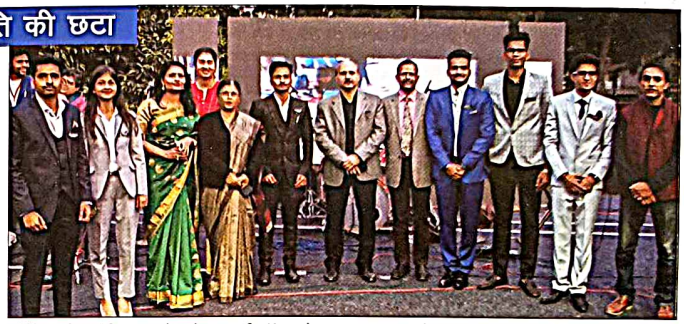

कॉलेज के वार्षिक समारोह में प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता के साथ शिक्षक व यूनियन पदाधिकारी।

कार्यक्रम के दूसरे दिन गायन प्रतियोगिता, समूह नृत्य प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, फोटोग्राफी प्रतियोगिता, शॉर्ट फिल्म प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक व विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें विभिन्न महाविद्यालयों से आये हुए प्रतिभागियों ने भाग लिया और पुरस्कार जीते। इस दिन का मुख्य आकर्षण इनायत बैंड रहा। तीसरे दिन 16 फरवरी को यूं तो कई प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, लेकिन इस दिन का मुख्य आकर्षण दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कौतूहल का विषय रहा। शाम होते ही उत्साहित चेहरे की खुशियां छुपाए नहीं छुप रही थी। उत्सुकता भरी निगाहें तेजी के साथ साउथ कैंपस की ओर देखने लगीं। कारण था महोत्सव में होने वाले पंजाब के मशहूर संगीतकार गुरी की प्रस्तुति। अंत में पंजाबी गायक गुरी के गाने के साथ इस महोत्सव का समापन भव्य अंदाज़ में हुआ।

महोत्सव को सफल बनाने में कार्यक्रम के संयोजक व छात्रसंघ सलाहकार डॉ. राकेश कुमार, उप सलाहकार डॉ. सीमा गुप्ता, कला एवं संस्कृति समिति की संयोजिका डॉ. मुक्ता, डॉ. राजेश सचदेवा, अनुशासनात्मक समिति के संयोजक डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. दीप शिखा, व अन्य शिक्षक गणों के साथ ही छात्रसंघ पदाधिकारियों का भरपूर सहयोग रहा।

कला प्रदर्शनी को सभी ने सराहा

लीशा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में अगस्त 2018 को इनारा सोसायटी की ओर से चित्र व कला की प्रस्तुति की गई। इनारा महाविद्यालय की ललित कला की सोसाइटी है तथा जिसका अस्तित्व महाविद्यालय में कई वर्षों से है, जो महाविद्यालय के हर समारोह और संगोष्ठी में साज–सज्जा रंगोली व अन्य कार्यों में अपना सक्रिय योगदान देती रही है।

हाल ही में सोसाइटी के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष की सहमति से विद्यार्थियों

इनारा सोसाइटी

को नियुक्त किया गया तथा फलस्वरूप शुभम राज अध्यक्ष बने। उनकी सक्रियता के कारण सोसाइटी में अच्छे और बेहतरीन सदस्यों की नियुक्ति हुई है। अध्यापकगणों की सहायता से इनारा की ओर से 29 अगस्त 2018 को महाविद्यालय में अब तक की पहली प्रस्तुति रही है। इस प्रस्तुति की सभी छात्र–छात्राओं ने प्रशंसा की व अध्यापकगणों व प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने भी इस प्रदर्शनी को निहारा। वैसे तो प्रदर्शनी में तमाम रचनाएं शामिल की गईं, लेकिन कुछ रचनाओं ने शिक्षकों और विद्यार्थियों का ध्यान काफी खींचा।

रचनाओं को देखते हुए प्राचार्य ने सोसायटी के सभी सदस्यों का प्रोत्साहन बढ़ाया और यह आश्वासन दिया कि ऐसे कार्यक्रम होते रहेंगे।

रामलाल आनंद महाविद्यालय और एसएम सहगल फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में हुई संगोष्ठी।

ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमिका अहम

प्रज्ञा सैनी

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय एवं एस.एम. सहगल फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमिका पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। एक दिवसीय संगोष्ठी में वक्ता के तौर पर पूजा मुरादा निर्देशिका एस.एम. सहगल एवं सोना शर्मा जो कि पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया की प्रोडक्शन डायरेक्टर हैं, मौजूद रहीं।

संगोष्ठी का उद्देश्य ग्रामीण विकास में मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डालना था। पारस्परिक विचार–विमर्श के माध्यम से छात्रों को समझाया गया कि वे किस तरह ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं को मीडिया के माध्यम से उजागर करके ग्रामीण विकास में अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं। कृषि पत्रकारिता में अपना भविष्य बनाने के लिए युवा पत्रकारों के पास सुनहरा अवसर है। पूजा मुरादा ने बताया कि उन्होंने मेवात को पानी की कमी, खेती की कमी, शिक्षा का अभाव, गरीबी होने की वजह से कम्युनिटी रेडियो को स्थापित करने के लिए चुना। उनके कम्युनिटी रेडियो का नाम अनकहे लफ्ज़ों को मिली जुबान अल्फाज़–ए–मेवात (एफएम 107.8) है।

हिंदी पत्रकारिता

उन्होंने बताया कि अगर गांव की खबर सनसनीखेज खबर न हो तब तक उसे सामान्यतः खबरों में जगह नहीं दी जाती इसीलिए सी फॉर डी कम्युनिटी स्तर पर जरूरी है। सी फॉर डी से अभिप्राय है कम्युनि. टीकेशन फॉर डेवलपमेंट। इसके अंतर्गत कम्युनिटी रेडियो, कम्युनिटी न्यूजपेपर, वॉइस कॉल, वॉल पेटिंग एवं कॉल सेंटर आते हैं। इसका उद्देश्य कनेक्टिंग लोकल रिचिंग ग्लोबल है।

सोना शर्मा ने फाउंडेशन की ओर से निर्देशित धारावाहिक 'मैं कुछ भी कर सकती हूं' से अवगत कराया। यह धारावाहिक डॉ. स्नेहा माथुर के जीवन पर आधारित था, जो मुंबई से डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करके अपने गांव प्रतापपुर वापस लौटती हैं और वहां की ग्रामीण समस्याओं को दूर करने के लिए अकेली संघर्ष करते हुए नजर आती हैं। सवालों के सत्र में जब एक छात्र ने सवाल किया कि 'क्या जनसंख्या वृद्धि को वाकई रोका जाना चाहिए' तो सोना ने कहा कि जनसंख्या वृद्धि एक सामान्य प्रक्रिया है। इसे किसी पॉलिसी द्वारा रोका नहीं जा सकता। बस इसमें लड़के और लड़की की आयु में निर्धारित समय अंतराल होना चाहिए तभी इस स्थिति पर काबू पाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमने जो धारावाहिक बनाया है वह लोगों से सीख कर बनाया है।

उन्होंने लोगों के पास जाकर उनकी कहानियों से प्रभावित होकर धारावाहिक बनाया जो गांव के निजी जीवन में आने वाली समस्याओं जैसे स्त्री शिक्षा, बाल विवाह, स्वास्थ्य सुविधाएं, घरेलू हिंसा, भ्रष्टाचार आदि हैं। संगोष्ठी में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, विभाग की प्रभारी डॉ. अर्चना गौड़, संयोजक डॉ. राकेश कुमार, डॉ. निशा, डॉ. श्वेता और डॉ. प्रदीप कुमार आदि मौजूद रहे। संगोष्ठी के समापन पर प्रभारी डॉ. अर्चना गौड़ ने आगंतुक वक्ताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया।

अनारकली ऑफ आरा

भारती

नई दिल्ली। रामलाल आनंद कॉलेज के रंगमंच में 11 नवम्बर 2018 को पर्दा सोसाइटी ओर से फिल्म 'अनारकली ऑफ आरा' दिखाई गई। इस फिल्म के डायरेक्टर अविनाश दास हैं जिनका नाता पत्रकारिता से रहा है। यह फिल्म तारावानो फैज़ाबादी से प्रेरित होकर बनाई गई है।

पर्दा सोसाइटी

इस फिल्म के माध्यम से कई गंभीर मुद्दों पर दर्शकों का ध्यान खींचा गया। यह फिल्म बिहार के आरा ज़िले के एक छोटे से मोहल्ले में रहने वाली लोकगायिका और नृत्यांगना 'अनारकली' की कहानी पर केन्द्रित है। फिल्म की भाषा में उत्तर प्रदेश व बिहार की भाषा का मेल है। सभी कलाकार अपनी कसौटी पर खरे उतरे हैं, लेकिन किसी एक कलाकार का नाम लेना है तो कहा जाएगा यह फिल्म स्वरा भास्कर की है। फिल्म को सभी विद्यार्थियों ने खूब पसंद किया।

सुगम : एक नया और अच्छा मंच

प्रवेश

नई दिल्ली। समान अवसर प्रकोष्ठ सोसायटी की ओर से दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में 'सुगम 2019' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दो दिवसीय यह कार्यक्रम 28 से 29 मार्च तक चला।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ.

समान अवसर सोसाइटी

राकेश कुमार गुप्ता द्वारा किया गया और अतिथि के रूप में प्रो. विपिन कुमार तिवारी मौजूद रहे। प्राचार्य ने अतिथि का स्वागत करते हुए आयोजन की औपचारिक शुरुआत की। तत्पश्चात कार्यक्रम में विभिन्न विशेष विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभाओं से लोगों को अवगत कराने का अवसर प्राप्त हुआ।

संपादकीय

गतिविधियों का आइना है आरएलए समाचार

डॉ.राकेश कुमार

शिक्षा मनुष्य को एक बेहतर मनुष्य बनाने का प्रयास है तो महाविद्यालय वह जगह है जहां आप जिंदगी जीने की कला सीखते हैं। साहित्य, संगीत, कला, वाणिज्य और विज्ञान की विभिन्न धाराओं का संगम यहीं पर होता है। भले ही आप किसी भी विषय के हों पर कलाएं आपको एक जगह पर लेकर आ जाती हैं। यहां आप नेतृत्त्व, सहयोग, सर्जना और योजना के मूल को जान पाते हैं। आप जान पाते हैं कि श्रम, ईमानदारी और एकाग्रता के महत्व को, इसी का परिणाम है कि रामलाल आनंद कॉलेज का 2018–19 का यह सत्र अनेक मायनों में महत्त्वपूर्ण रहा। कॉलेज ने नैक से मान्यता प्राप्त की, अनुसंधान और ज्ञान के नए माध्यमों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम चले, विभिन्न विषयों पर कार्यशालाएं व संगोष्ठियां आयोजित की गईं, अनेक सांस्कृतिक–साहित्यिक कार्यक्रम हुए जिनमें विद्यार्थियों से लेकर शिक्षकों की भागीदारी अभूतपूर्व रही। इस पूरे सत्र में पर्यावरण, स्वच्छता, स्वास्थ्य, अनुशासन, देशानुराग, वै. ज्ञानिक चेतना, अहिंसा और सामाजिक न्याय के विषय चर्चा के केंद्र में रहे। हमने उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों को छुआ। हमें बेहद खुशी है कि हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की भागीदारी इन सभी कार्यक्रमों में रही। रिकॉर्डिंग, रिपोर्टिंग से लेकर आयोजन तक में हमारे विद्यार्थियों ने इनमें शिरकत की। आर.एल.ए. समाचार का यह अंक आइना है साल भर की गतिविधियों का। यह बताता है कि हमने कितनी यात्रा तय की है और कितनी दूर अभी और जाना है। यह एक सकारात्मक संदेश देता है कि हमारी उत्कृष्टता की यात्रा निरंतर जारी है और हम आने वाले वर्षों में और अधिक मज़बूती के साथ आगे बढ़ेंगे।

मौजूदा दौर में छात्र राजनीति के मायने

सौरभ मिश्रा

जब भी हम राजनीति की बात करते हैं तो कुछ प्रमुख बिन्दु हमारे जेहन में आते हैं, जिसमें स्थानीय मुद्दे, समस्याएं, विचारधारा, जाति, धर्म, क्षेत्र और लिंग प्रमुख होते हैं। साथ ही इसमें आरोप–प्रत्यारोप, पक्ष–विपक्ष, वाद–विवाद, बहस–मुबाहिसा शामिल होता है, जिसे केवल बड़ी राजनीतिक पार्टियों व राजनेताओं तक सीमित करके देखा जाता है। बात जब छात्र राजनीति की हो तो लोगों के कान खड़े हो जाते हैं। कहा जाने लगता है कि छात्रों का काम केवल पढ़ना–लिखना है। राजनीति को राजनेताओं पर छोड़ देना चाहिए।

इसके पीछे सबसे बड़ी वजह यह है कि छात्रों में राजनीति को लेकर समझ का अभाव होता है। कहा जाता है कि छात्र अगर राजनीति में आएंगे तो जो सपने उनके मां–बाप ने उनके लिए देखे हैं उन्हें कौन पूरा करेगा? वो अपने बच्चों पर लाखों रुपये इसलिए खर्च करते हैं ताकि वह एक अच्छे इंसान बनें। नौकरी पाएं देश और दुनिया में नाम करें न कि स्कूल–कॉलेज में नेतागिरी करें। इससे पता चलता है कि छात्र राजनीति को लेकर आमजन की समझ कितनी सूक्ष्म है। छात्र राजनीति दरअसल छात्रों के मुद्दों को सामाजिक मुद्दों के साथ जोड़कर उनके हक की लड़ाई को लड़ने का एक माध्यम है। इसमें आलोचना, प्रतिक्रिया और विरोध का दायरा शैक्षिक होता है। तर्क को तर्क से, विचारों को विचारों से, सूचनाओं और आंकड़ों से उत्तर दिया जाता है।

अगर हम एक नज़र इसके इतिहास पर डालें तो हम पाएंगे कि भारत में राजनीति का इतिहास करीब 170 साल पुराना है। 1848 में दादाभाई नौरोजी ने 'द स्टूडेंट साइंटिफिक एंड हिस्टोरिक सोसाइटी' की स्थापना की थी। आजादी से पहले और फिर बाद में समय के साथ छात्र राजनीति की भूमिका बदलती गई। पहले की बात करें तो युवा शक्ति को पहचानते हुए लाला लाजपत राय, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, जवाहर लाल नेहरू ने भी छात्र राजनीति को अहम माना था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 1919 में सत्याग्रह, 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन और 1942 में अंग्रेजों भारत छोडो आंदोलन की शुरुआत की तो युवाओं और खासकर छात्रों को इससे जोड़ा। गुजरात विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, विश्वभारती, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और जामिया मिलिया इस्लामिया जैसे शिक्षा केन्द्र विद्यार्थी आंदोलन का गढ़ बन गए थे।

आजादी के बाद 1974 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की दमनकारी नीतियों के खिलाफ हुए छात्र आंदोलन भारतीय इतिहास में आज़ादी के बाद हुए सबसे बड़े छात्र आन्दोलन की मिसाल है। इसी से निकले छात्र राजनेताओं ने आगे चलकर मुख्यधारा की राजनीति में अपना नाम किया। इसमें लालू प्रसाद यादव, राम विलास पासवान, रविशंकर प्रसाद, ममता बनर्जी, मुलायम सिंह यादव आदि प्रमुख नेता हैं। वहीं अगर हम आज के समय में छात्र राजनीति की बात करें तो इसका स्वरूप काफी बदल चुका है। आज करीब 31 छोटी बड़ी छात्र इकाई हैं, जो किसी न किसी दल से संलग्न हैं। यही कारण है कि बीते कुछ सालों में छात्र राजनीति में बाहुबल, धनबल, धर्म, जाति और क्षेत्रवाद जैसे हथकंडों का इस्तेमाल हो रहा है, जो अभी तक मुख्यधारा की राजनीति तक ही सीमित था।

इसे रोकने के लिए 2007 में सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के पर सभी विश्वविद्यालयों में लिंगदोह समिति की सिफारिशों के आधार पर छात्र संघ चुनाव कराने की बात कही गई, जिसमें कुछ विशेष प्रावधान किए गए। मसलन–पूरी चुनाव प्रक्रिया दस दिन में पूरी कराई जाए। प्रत्याशी बनने की योग्यता स्नातक छात्र के लिए 22 वर्ष, स्नातकोत्तर के लिए 25 वर्ष व शोध छात्र के लिए 28 वर्ष है। प्रत्याशी के लिए कक्षाओं में न्यूनतम 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य, आपराधिक रिकॉर्ड, मुकदमा, सजा या अनुशासनात्मक कार्रवाई वाला छात्र प्रत्याशी नहीं होगा। हालाँकि समिति की सिफारिशों की अनदेखी खूब हो रही है। बड़े पैमाने पर पोस्टर–बैनर से लेकर लाखों रुपए तक खर्च किए जाते हैं। एक तरह छात्र राजनीति का यह मॉडल है तो दूसरी ओर देश में व्याप्त बेरोजगारी, भुखमरी, असमानता और सामंतवाद के खिलाफ सरकार की आंख में आंख डालकर सवाल भी पूछे जाते हैं। इस तरह की राजनीति के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय जाना जाता है। हमें समझना होगा कि जिस संविधान ने वोट देने का अधिकार दिया उसी ने राजनीति समझने व उसके जरिए अपनी बात सरकार के सामने रखने का अधिकार भी दिया है।

देशप्रेम के साथ मानव मूल्यों के बारे में सीखें

वसुन्धरा

रामलाल आनंद महाविद्यायल में 13 अगस्त 2018 को संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका संच. लन हिंदी पत्रकारिता के छात्र महेंद्र कुमार और धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सजय कुमार शर्मा ने किया। संगोष्ठी में आए वक्ता कृष्ण मोहन ने अपने जीवन से जुड़े अनुभवों को विद्यार्थियों के साथ साझा किया और साथ ही विद्यार्थियों से कहा कि ज़िन्दगी में हार–जीत चलती रहती है। इसी संदर्भ में उन्होंने एक पंक्ति सुनाई–"जीवन में कभी थको नहीं, थको तो कभी डरो नहीं।"

कृष्ण मोहन ने बीजेएमसी के बच्चों से कहा कि निष्पक्ष पत्रकारिता करना ही असली पत्रकारिता है। निष्पक्ष पत्रकारिता करते हुए हमें काम पर भरोसा रखना चाहिए। गोवा के पुलिस महानिदेशक रहे आमोद कंठ ने कहा कि सभी विद्यार्थियों के अंदर राष्ट्रवाद,देश प्रेम तो है परंतु हमें मानव मूल्यों के बारे में सीखने की ज़रूरत है। उन्होंने अपनी 'प्रयास' संस्था के बारे में बताया कि 'प्रयास' एक ऐसी संस्था है जो गरीब, बेबस, बेसहारा बच्चों की ज़िंदगी को संवारने का काम करती है।

मेजर जनरल दिलावर सिंह ने कहा कि भारत में राष्ट्रवाद की भावना सबसे ज्यादा असम में देखी जा सकती है। कश्मीर पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि कश्मीरी नहीं सोचते की हम भारत से अलग हो रहे हैं परंतु भारत यह सोचता है कि कश्मीर भारत से अलग हो तो नहीं रहा। अंत में उन्होंने समय का सदुपयोग करने की सलाह दी और युवा पीढ़ी को इंगित करते हुए कहा कि अपना समय व्यर्थ न करें बल्कि उसका सदुपयोग करें। इससे पहले सभी वक्ताओं का स्वागत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने किया।

कुलदीप नैयर : पत्रकारिता के स्तंभ

काजल

कुलदीप नैयर का जन्म 14 अगस्त 1924 को सियालकोट, जिसे अब पाकिस्तान कहा जाता है, में हुआ था। कुलदीप नैयर भारत के एक प्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार थे। उन्होंने भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा पाकिस्तान से ही प्राप्त की। यूएसए से पत्रकारिता की डिग्री ली। उन्होंने दर्शनशास्त्र में पीएचडी की थी। वह बहुत ही ज्ञानी व्यक्ति थे। उनका कार्य अनुभव बहुत ही अधिक रहा।

वह भारत सरकार के प्रेस सूचना अधिकारी के पद पर कई वर्षों तक कार्य करने के बाद यूएनआई, पीआ. ईवी एवं द इंडियन एक्सप्रेस के साथ लंबे समय तक कार्य किया। कुलदीप नैयर 25 वर्षों तक 'द टाइम्स लंदन' के संवाददाता भी रहे थे। अपने शुरुआती दौर में वह एक उर्दू प्रेस रिपोर्टर थे। वह दिल्ली समाचार पत्र द स्टेट्समैन के संपादक थे। उन्होंने भारत में आपातकाल की स्थिति में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, जिस कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा।

सन् 1996 में संयुक्त राष्ट्र संघ के लिए गए भारत के प्रतिनिधि मंडल के वह सदस्य थे। उन्होंने 80 से अधिक समाचार पत्रों के लिए 14 भाषाओं में कॉलम लिखा। पत्रकारिता से जुड़े अनेक मसलों पर वह समय–समय पर मुखर भी होते रहे। उनकी कुछ प्रमुख किताबें 'विटवीन द लाइंस', डिस्टेंट नेबर्स (ए टेल ऑफ सबकोन्टिनेंट), इंडिया आफ्टर नेहरू, वॉल एट वाघा (इंडो–पाक रिलेशन्स) आदि हैं। उन्होंने अपनी आत्मकथा 'बिटवीन द लाइंस' भी लिखी, जिसमें उन्होंने अपने देश के प्रति विचारों और घटनाओं का पूरा विवरण दिया।

उन्हें लंबे जीवनकाल में काफी पुरस्कार मिले, जिसमें हल्दी घाटी अवार्ड, फ्रीडम ऑफ इनफॉरमेशन, भाई वीर सिंह, प्राइड ऑफ इंडिया जैसे अनेक सम्मान शामिल हैं। इसके साथ ही समय–समय पर उन्हें पत्रकारिता के क्षेत्र उल्लेखनीय रिपोर्टिंग और खोजी पत्रकारिता के लिए भी सम्मानित किया गया। कुलदीप नैयर ऐसे लेखक एवं पत्रकार रहे जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से देश ही नहीं बल्कि दुनिया में अपनी पहचान बनाई। वह एक तरह से पत्रकारिता के स्तंभ थे। जीवन की लंबी पारी खेलने के साथ उनका 22 अगस्त 2018 का निधन हो गया।

ज्ञान–विज्ञान के साथ रचनात्मक शिक्षा के पक्षधर गांधी

अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारंभ से ही गांधी का विश्वास था कि वे जिस प्रकार के परिवर्तन को स्थापित करना चाहते हैं, वह केवल शिक्षा को एक रचनात्मक और क्रांतिकारी दिशा देकर ही हो सकता है।

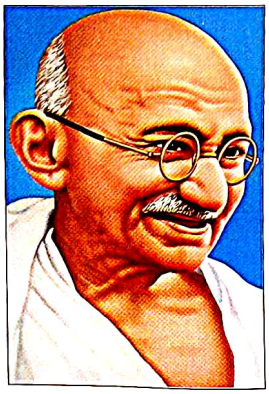

गांधी के लिए शिक्षा परिवर्तन का एकमात्र मूल साधन था और वे इसके प्रतिपालन के लिए तैयार थे, जो कि व्यक्ति के अधिकार को बदलने के लिए शुरू किया गया था। शिक्षा पर गांधी का वाक्य है, "शिक्षक को सक्षम होना चाहिए ताकि वह बच्चों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करा सके।" उन्होंने कहा कि बच्चों को प्रतिस्पर्धी होने की जरूरत नहीं है बल्कि उनमें रचनात्मक पहलुओं का विकास होना चाहिए।

गांधी ने मैकाले द्वारा दी गयी शिक्षा नीति के तीन 'आर' को नकार दिया। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के लिए तीन एच–हैंड, हेड, हार्ट यानी हाथ, मस्तिष्क व हृदय के सिद्धांत पर जोर दिया। गांधी के अनुसार शिक्षा एक उपकरण है, जो स्वयं को खोजने का एक माध्यम है और इस माध्यम से मनुष्य प्रकृति और इंसान से जुड़ा महसूस कर सकता है। गांधी शिक्षा के द्वारा मन, शरीर और आत्मा का पूर्ण विकास करना आवश्यक समझते थे। इसलिए गांधी ने उस शिक्षा को श्रेष्ठ बताया जो हमें सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक क्षमता भी दे सके। वे कहते हैं–शिक्षा सिर्फ अक्षर–ज्ञान नहीं है वरन यह व्यवहार का परिमार्जन करने की प्रक्रिया है।

गांधी के अनुसार अक्षर का ज्ञान हो जाने से हम उसे साक्षर भले ही कह लें पर जब तक उसके व्यवहार में किसी भी प्रकार का परिमार्जन नहीं होता तब तक हम उसे शिक्षित नहीं कह सकते हैं। इस प्रकार शिक्षित व्यक्ति वही है जिसने अपने व्यवहार में, अपने जीवन में, अपने जीवन शैली में और अपनी भूमिका में परिवर्तन किया है। 31 जुलाई 1937 को हरिजन सेवक में गांधी जी ने शिक्षा की जो परिभाषा दी है उसमें वे कहते हैं कि 'शिक्षा वही है जो बालकों की आत्मिक, बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओं को उनके अंदर से बाहर प्रकट एवं उत्तेजित करती है।'

22–23 अक्तूबर 1937 को गांधी जी की अध्यक्षता में आयोजित 'वर्धा शिक्षा सम्मेलन' में वह बुनियादी शिक्षा की एक रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं, जिसकी मुख्य बातें निम्न हैं–7 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए प्रा. थमिक एवं निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाए, प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो, संपूर्ण शिक्षा किसी शिल्प अथवा उद्योग पर आधारित हो, शिल्प का चुनाव बच्चों की योग्यता अथवा क्षेत्रीय आवश्यकताओं के आधार पर किया जाए, बच्चों द्वारा निर्मित वस्तुओं का उपयोग हो और उनसे आर्थिक लाभ प्राप्त किया जाए। 1929 में गांधी जी 'यंग इंडिया' में लिखते हैं कि जब हमारे बच्चे स्कूल में दाखिला लेते हैं तो उन्हें कलम और किताबों की कोई जरूरत नहीं होनी चाहिए बल्कि उन्हें कोई सरल उपकरण देना चाहिए ताकि वह स्वतंत्र रूप से उसे सीख सकें व संभाल सकें और प्रकृति का आनुवंशिक रूप से पता लगा सकें। वे शिष्टाचार, सबक और व्यावहारिक स्वच्छता सीखेंगे जिससे वे एक मूक क्रांतिकारी बन जाएंगे। इसका अर्थ है शैक्षिक विधि में क्रांति, जिससे वे एक बेहतर नागरिक बन सकेंगे। मूल्य आधारित शिक्षा और गांधीवादी विचार के एक साथ संपर्क में आने से शिक्षा व्यवस्था में अच्छे परिवर्तन हो सकते हैं।

सचिन कुमार

गांधी की शिक्षा प्रणाली में एक प्रयोग था और यह उस समय के भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। अगर गांधी की शैक्षणिक प्रणाली का पालन किया गया होता तो आज इतनी बेरोजगारी नहीं होती। साथ ही इस समय तक 100 फीसदी साक्षरता प्राप्त हो जाती। अगर हम गांधी की बुनियादी शिक्षा प्रणाली का पालन करते तो यह विफलता नहीं होती। हम अभी भी उस पद्धति पर वापस जा सकते हैं। हमें लगता है कि आज भी उनके विचार काफी हद तक तार्किक हैं। आखिर में यही कहना चाहता हूं कि गांधी जी नहीं चाहते थे कि लोग विज्ञान और प्रौद्योगिकी को अनदेखा करें अपितु इसके साथ–साथ बुनियादी शिक्षा और रचनात्मक पहलुओं पर भी विशेष ध्यान दें।

बुजुर्गों में होने वाली दिक्कतें रेखांकित

माइक्रोबॉयोलॉजी विभाग की ओर से आयोजित सेमिनार में कई वक्ताओं ने भाग लिया।

भारती

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के माइक्रोबायोलाजी विभाग की ओर से 1 फरवरी 2019 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी प्रोबायोटिक्स जीवनशैली विकारों के विषय पर थी, जो प्रोबायोटिक्स एसोसिएशन आफ इंडिया के सहयोग से आयोजित की गई थी। संगोष्ठी में विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के 160 से अधिक विद्यार्थियों और 25 शिक्षकों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य लाभकारी प्रोबायोटिक उत्पादों की जागरूकता को बढ़ाना था। डॉ नीरजा ने प्रोबायोटिक्स की परिवर्तनकारी शक्ति पर ध्यान केंद्रित किया, जो स्वास्थ्य लाभ की एक विस्तृत श्रृंखला में है। डॉ. प्रभांशु त्रिपाठी ने "प्रोबायोटिक और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया पर अपनी चर्चा में खाने से होने वाली एलर्जी में प्रोबायोटिक्स की उपचारात्मक और निवारक भूमिका पर ज़ोर दिया।

माइक्रोबॉयोलॉजी विभाग

डॉ. जसवीर सिंह ने 'क्रियात्मक खाद्य पदार्थों के पहलुओं पर एक प्रस्तुति दी। इस संबंध में उन्होंने पारंपरिक खाद्य पदार्थ, पूरक आहार, चिकित्सा खाद्य पदार्थ या दवाओं के लेबलिंग से संबंधित नियमों और दवाओं के उपयोग की प्रकृति के आधार पर जानकारी दी। डॉ. शालिनी सहगल ने प्रोबायोटिक खाद्य पदार्थों के उपयोग के प्रति उपभोक्ता की धारणा और दृष्टिकोण का अवलोकन किया। डॉ. विजेंद्र मिश्रा ने प्रोबायोटिक एसिड बैक्टीरिया के एंटीआक्साइड" के बारे में बात की। उन्होंने दुग्धमल में जीवाणु पैदा करने की क्षमता पर बल दिया। प्रो. जेएस विर्दी ने "जराट्रिक देखभाल प्रबंधन के लिए प्रोबायोटिक्स" में प्रो इंप्लीमेंटरी स्थिति और बुजुर्गों में उम्र से संबंधित अन्य विकृति को कम करने में प्रोबायोटिक्स के योगदान को रेखांकित करते हुए वार्ता प्रस्तुत की। सभी अतिथियों ने अंत में सभी छात्रों के सवालों का उत्साह पूर्ण जवाब दिया।

स्वागत समारोह

पुराने विद्यार्थियों की उपलब्धियों का बखान

दीपक कुमार त्रिवेदी

नई दिल्ली। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने 1 अगस्त 2018 को 11:00 बजे नवांगतुक परिचय समारोह का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की शुरुआत पत्रकारिता विभाग के पूर्व विद्यार्थियों की उपलब्धियां बताने के साथ हुई।

विभाग की अध्यक्ष डॉ. अर्चना गौड़ ने नए विद्यार्थियों का स्वागत किया और प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने अपना परिचय दिया। इसी दौरान डॉ. सुभाष चंद्र डबास एवं डॉ. राकेश कुमार ने विद्यार्थियों को उनकी नैतिकताओं का बोध कराया और इस विश्वास के साथ उनको सफर शुरू करने को कहा कि उनकी हर परेशानियों में विभाग के सभी अध्यापक उनके साथ हैं।

"सुन्दर हैं सुमन विहग सुन्दर, मानव तुम सबसे सुन्दरतम" इन पंक्तियों के माध्यम से डॉ. संजय शर्मा ने विद्यार्थियों को उत्साहित किया और सभी अध्यापकों ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उनका हौसला बुलंद किया।

सेमिनार हॉल में हुए इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्षा डॉ. अर्चना गौड़, वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सुभाष चंद्र डबास, पत्रकारिता विभाग के संयोजक डॉ. राकेश कुमार, डॉ. संजय कुमार शर्मा तथा अन्य अध्यापक मौजूद थे।

रेडियो जॉकी का ऑडिशन

अपूर्वा सिंह

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में रेडियो जॉकी टीम के लिए 7 एवं 8 अगस्त 2018 को ऑडिशन लिए गए, जिसमे हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार माध्यम के तीनों वर्ष के छात्र–छात्राओं ने बड़े ही जोश के साथ हिस्सा लिया। इस ऑडिशन को दो चरणों में करवाया गया।

हिंदी पत्रकारिता

प्रथम चरण में प्रतिभागियों को दिए गए 3 विषयों में से अपनी पसंद के किसी एक विषय पर कोई पटकथा, रिपोर्ट व लेख लिखने के लिए दिया गया और दूसरे चरण में प्रतिभागियों को मीडिया स्टूडियों में कैमरा फेसिंग, आवाज़, शाब्दिक व्याकरण जैसी महत्वपूर्ण चीजों को देखने के लिए उनकी रिकॉर्डिंग करवाई गई। रिकॉर्डिंग में प्रतिभागियों को एक उर्दू कहानी, हिंदी गिनती, इंग्लिश पैराग्राफ रीडिंग, समाचार रीडिंग करवाई गई।

प्रतिभागी की हाज़िरजवाबी और आत्मविश्वास देखने के लिए ऑडिशन में ऑन दा स्पॉट रिपोर्टिंग भी करवाई गई, जिसमें प्रतिभागियों को काफी मज़ा आया। पत्रकारिता विभाग के शिक्षक डॉ. राकेश कुमार, डॉ. अटल तिवारी, और डॉ. प्रदीप कुमार निर्णायकों के रूप में मौजूद रहे।

रेडियो जॉकी का फील्ड काफी भा रहा है और इसीलिए बिना किसी देरी के विभाग द्वारा ये ऑडिशन भी करवाये गए। पत्रकारिता विभाग अपने छात्र–छात्राओं के लिए आए दिन कोई न कोई वर्कशॉप, सेमिनार, प्रतियोगिताएँ करवाता रहता है।

पर्यावरण विज्ञान

रंगोली के रंगों के क्या कहने

निक्की राय

नई दिल्ली। विश्व ओज़ोन दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा इस कार्यक्रम का संचालन किया गया। विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ के अपनी सहभागिता दिखाई, खासतौर पर प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता का प्रदर्शन किया। विभाग ने विद्यार्थियों के उत्साह व ओज़ोन दिवस को और अधिक रोमांचक बनाने के लिए विद्यार्थियों के लिए रंगोली, चित्रकारी जैसी कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। अंत में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को 'इको क्लब' की मेम्बरशिप मिली।

कविताओं ने बढ़ाया युवाओं का जोश

पारसमणि

नई दिल्ली। 15 अगस्त 2018 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर रामलाल आनंद महाविद्यालय में ध्वजारोहण समारोह आयोजित किया गया। इस वर्ष यह देश का 72वां स्वतंत्रता दिवस था।

स्वतंत्रता दिवस

इस वर्ष डॉ. राकेश कुमार गुप्ता के निर्देशन में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का कार्यभार कैप्टन डॉ. संजय कुमार शर्मा ने संभाला। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य के हाथों तिरंगे को फहराकर किया गया। राष्ट्रीय कैडेट कोर के गार्ड्स कमांडर जूनियर अंडर ऑफिसर राजेश कुमार बघेल की ओर से गार्ड ऑफ ऑनर दिलवाई गई। एनएसीसी ऑफीसर कैप्टन डॉ. संजय कुमार शर्मा ने अपनी देशभक्ति से ओतप्रोत कविताओं के ज़रिए विद्यार्थियों का उत्साह दोगुना किया और साथ ही श्रेष्ठ स्वच्छ भारत का संकल्प विद्यार्थियों को दिलाया। तदोपरांत मंच पर आमंत्रित एनसीसी कैडेट गुलशन कुमार झा ने अपनी कविता से सभी का दिल जीत लिया तथा अंत में संगीत प्रस्तुति ने लोगों को झूमने के लिए मजबूर कर दिया। इस राष्ट्रीय पर्व पर सभी का एकजुट होना ही अपने आप में एक महान उपलब्धि है और रामलाल आनंद महाविद्यालय इस परंपरा को बनाए हुए है।

एनसीसी की ओर से जलियांवाला बाग हत्याकांड के शताब्दी अवसर पर हुए आयोजन में जुटे कैडेट्स मुख्य वक्ता, प्राचार्य व शिक्षकों के साथ।

बलिदानी परंपरा को याद कराता जलियांवाला बाग

हत्याकांड से आजादी के आंदोलन की लौ और तेज हो गई थी : प्रो. राजबीर शर्मा

आभा कुमारी

नई दिल्ली। आज का दिन दो कारणों से बहुत अहम है। पहला वैसाखी के नजरिए से यह दिन सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक परंपरा का द्योतक है तो दूसरा जलियांवाला बाग को याद करते हुए बलिदानी परंपरा को याद करने का यह दिन है। अमृतसर में 100 साल पहले इसी दिन अपने को सभ्य कहने वाले लोगों ने ऐसा असभ्य काम किया, जिसे पूरी दुनिया ने देखा। यह बात शनिवार को जलियांवाला बाग हत्याकांड के शताब्दी अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के कार्यकारी परिषद के पूर्व सदस्य प्रो. राजबीर शर्मा ने कही।

रामलाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के राष्ट्रीय कैडेट कोर 7 दिल्ली बटालियन की ओर से जलियांवाला बाग हत्याकांड के शताब्दी अवसर पर आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता प्रो. राजबीर शर्मा ने कहा कि पूरे पंजाब क्षेत्र में राष्ट्रीय आंदोलन की लौ जलने लगी थी। उसी लौ को तेज करने के लिए 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग में डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू को सुनने के लिए हजारों लोग जमा हुए थे। इस लौ को दबाने के लिए जनरल डायर ने साजिशन निहत्थे लोगों पर गोलियों की बौछार करा दी थी, लेकिन वह अपने इरादों में कामयाब नहीं हुआ। उसके इस घृणित कार्य से आजादी की लौ मद्धिम पड़ने के बजाय और तेज हो गई थी। इतिहास गवाह है कि इसका परिणाम लोगों को आने वाले वर्षों में देखने को मिला।

प्रो. राजबीर शर्मा ने कहा कि जलियांवाला बाग हत्याकांड से बहुत

एनसीसी

से संदेश निकलते हैं, लेकिन तीन संदेश का मायने अधिक है। पहला–देश और समाज की एकता को कोई डिगा नहीं सकता। दूसरा–देश के लोग किसी की गुलामी पसंद नहीं करेंगे और तीसरा देश, समाज और भारत मां के लिए लोगों की बलिदानी परंपरा। उन्होंने कैडेट्स का आहवान करते हुए कहा कि जलियांवाला बाग से आप इन तीन संदेश को आत्मसात कर लीजिए। वैसे आप जो बलिदान देने का विचार सीख रहे हैं वह देश को काफी आगे ले जाएगा। 'तेरा वैभव अमर रहे मां, हम दिन चार रहें न रहें...' जैसी पंक्तियां पढ़ते हुए उन्होंने कैडेट्स से कहा कि यह देश की सुरक्षा और विकास के लिए बहुत जरूरी है।

इससे पहले महाविद्यालय के एनसीसी ऑफीसर कैप्टन डॉ. संजय कुमार शर्मा ने 'ये वीरों की परिपाटी है, और शहीदों की परिपाटी है' पंक्तियां पढ़ते हुए कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। साथ ही बताया कि जलियांवाला बाग सहित पूरे पंजाब ने आजादी में कितनी कुर्बानियां दीं। इसी परिप्रेक्ष्य में उन्होंने क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह सहित अनेक क्रान्तिकारी स्वतंत्रता सेनानियों का नाम लिया।

महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने मुख्य वक्ता प्रो. राजबीर शर्मा का पुष्पगुच्छ और स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। साथ ही समारोह में हिस्सा लेने आए महाविद्यालय व दूसरे कॉलेजों के विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। इस मौके पर हिंदी विभाग के वरिष्ठ शिक्षक डॉ. सुभाष चन्द्र डबास, डॉ. अनिल शर्मा, डॉ. राजेश गौतम सहित कॉलेज के विभिन्न विषयों के अनेक शिक्षक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

सोशल मीडिया के युग में पुस्तकों की महत्ता

विभा कुमारी, आशीष

नई दिल्ली। सोशल मीडिया आज के युवा पीढ़ी को आपने ज़ंज़ीरों में इस कदर जकड़ता जा रहा है कि वह अपने सबसे प्यारे दोस्त किताबों को भी भूलते जा रहे हैं।

सदियों से कहा जाता है कि पुस्तकें इंसान की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं। वहीं आज के इस इंटरनेट के दौर में भी पुस्तकों ने अपनी अहमियत खोई नहीं है। हां,

किताबों से दोस्ती

आजकल इंटरनेट का चलन बढ़ता ही जा रहा है और पुस्तकें कहीं न कहीं हमारे व्यक्तिगत जीवन से दूर होती जा रही हैं लेकिन इंटरनेट के इस युग में भी आज पुस्तक प्रेमियों की कमी नहीं है। चाहे ई–बुक का दौर हो या सोशल मीडिया का इस बीच भी पुस्तकें मज़बूती से डटी हैं। आज देश बहुत तरक्की कर रहा है और स्मार्ट लर्निंग की बात की जा रही है फिर भी यहाँ ज्ञान का उचित स्रोत पुस्तकों को ही माना जाता है। यही कारण है कि आज भी पुस्तकों को चाहने वाले बहुत है जिनको अगर पता चल जाए कि कहीं पुस्तक मेला लगा है तो वो अपने आपको जाने से रोक नही पाते। यह आदत बनाए रखनी होगी वरना वो दिन दूर नहीं जब आने वाली पीढ़ियां पुस्तक देखने के लिए संग्रहालय जाएंगी।

किसान कर्ज़ माफी पर वाद–विवाद प्रतियोगिता

कमलेश

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की वाद–विवाद समिति 'आरोह' की ओर से एक अन्तः महाविद्यालय वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 31 अक्टूबर 2018 को सेमिनार हॉल में किया गया। इस प्रतियोगिता का विषय था कि 'यह सदन मानता है कि किसानों की कर्ज़ माफी देशहित में है।' प्रतियोगिता में बहुत से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया व प्रत्येक प्रतिभागी को अपनी बात रखने के लिए चार मिनट का समय दिया गया। अध्यापकों ने भी इस विषय पर अपने भावों को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया तथा प्राध्यापक डॉ. प्रदीप कुमार ने अपनी कविता के माध्यम से किसानों की समस्या बताई और वहीं डॉ. अटल तिवारी ने प्रसिद्ध कृषि पत्रकार पी. साईनाथ के बारे में बताते हुए किसानों की समस्याओं को उजागर किया। साथ ही कहा कि किसानों पर किस तरह साईनाथ ने काम किया, उसे जानना आवश्यक है। इसके बाद प्रतियो. गिता की निर्णायक समिति जिसमें तीन सदस्य शामिल थे। डॉ. सुनैना,

आरोह सोसाइटी

डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी, डॉ. देवेन्द्र कुमार ने प्रतिभागियों द्वारा दिये गये भाषणों का मूल्यांकन भाषण की विषय वस्तु प्रस्तुतीकरण व भाषा के आधार पर किया। डॉ. देवेन्द्र कुमार ने विजेताओं की घोषणा की। प्रथम पुरस्कार आशुतोष मिश्रा को दिया गया। अन्त में वाद –विवाद समिति के संयोजक डॉ. सुभाष चन्द्र डबास ने विजेताओं को बधाई दी तथा दर्शकों और उपस्थित अध्यापकों का भी धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

गांधी विचार प्रसारित करने की मुहिम

मानसी बिष्ट

गांधी स्टडी सर्किल की यह टीम गांधी के विचारों को प्रसारित करने में निभा रही अहम भूमिका।

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 24 अगस्त 2018 को गांधी स्टडी सर्किल की ओर से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन पूर्व राज्यसभा सांसद महेश शर्मा ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। संगोष्ठी का शुभारंभ सरस्वती वंदना के साथ हुआ।

संगोष्ठी का विषय 'अंडरस्टैंडिंग गाँधी' था, जिसमें विभिन्न कॉलेजों से आये विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने शिरकत की। संगोष्ठी के वक्ताओं में शामिल थे–पूर्व सांसद महेश शर्मा, गांधी भवन के निदेशक प्रो. रमेश भारद्वाज, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के प्रोग्राम अफसर डॉ. वेदाभ्यास कुंडु, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति अच्युतानंद मिश्र और पीजीडीएवी के राह–प्राध्यापक डॉ. अवनिजेश अवस्थी।

दिल्ली विवि के गांधी भवन में 'व्यक्ति एवं राग्राज का निर्माण' विषय पर दस दिवसीय कार्यशाला 21 से 30 जनवरी 2019 तक आयोजित की गई, जिसमें रामलाल आनंद कॉलेज के विद्यार्थी सचिन कुमार, दीपक कुमार त्रिवेदी, रोविन जोरिया और मानसी बिष्ट ने भाग लिया। कार्यशाला में गाँधी स्टडी सर्किल के संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार ने डिप्टी समन्वयक के रूप में काम किया। इन कार्यक्रमों के साथ–साथ गांधी स्टडी सर्किल ने कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि 22 फरवरी 2019 को अपनी दूसरी शांति रैली का आयोजन किया। इस रैली का मुख्य उद्देश्य महिला सशक्तिकरण था, वहीं 5 मार्च 2019 को गाँधी स्मृति और दर्शन समिति के सहयोग से रामलाल आनंद महाविद्यालय में "गांधी के सपनों का भारत" विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन कराया गया। इस व्याख्यान में बतौर मुख्य वक्ता गांधी स्मृति और दर्शन समिति के निदेशक डॉ. दीपांकर श्रीज्ञान पहुँचे और उनकी ओर से विद्यार्थियों को गांधी दर्शन से अवगत कराया गया।

कालिदास ने मोह लिया मन

अंजली

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से 31 अगस्त 2018 को मोहन राकेश के लिखे नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन कराया गया। 'शून्य' संस्था की ओर से मंचित नाटक में कालिदास का व्यक्तित्व निखर के सामने आया।

नाटक में सभी पात्रों ने अपने अभिनय से हॉल में मौजूद सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों का मन मोह लिया। साथ ही नाटक में प्रयोग होने वाली भाषा उसका उच्चारण लाजवाब रहा। नाटक के जरिए ग्रामीण जीवन की झलकियां और प्रकृति की खूबसूरती बेहतरीन अंदाज में देखने को मिली। नाटक के सभी पात्रों ने अपने–अपने किरदारों को बखूबी निभाया।

हिंदी विभाग

एम्फीथिएटर का मंच भी ग्रामीण जीवन को समझने में सहायक रहा। नाटक की हर बात सराहनीय और कावितेतारिफ थी। कालिदास के व्यक्तित्व को समझने में यह नाटक अच्छा स्रोत है। नाटक में मल्लिका की भूमिका भी अहम थी, जिसे 'शून्य' संस्था की कर्ताधर्ता डॉ. रमा ने निभाई।

नाटक में आषाढ़ की पहली बारिश के दिनों के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन सराहनीय था। नाटक के माध्यम से पता चला कि मनुष्य शोहरत से तब तक संतुष्ट नहीं होता जब तक उसका मन संतुष्ट नहीं होता। आषाढ़ की एक रात और भी कई तथ्यों को उजागर करती है। मंचन के पश्चात विभागाध्यक्ष डॉ. अर्चना गौड़ ने सभी कलाकारों का स्वागत किया तो विद्यार्थियों ने भी तालियों से उत्साह बढ़ाने में कंजूसी नहीं दिखाई।

महाविद्यालय में 'शून्य' संस्था की ओर से नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन किया गया।

अनुवाद पाठ्यक्रम

रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद की महत्ता

आशीष

नई दिल्ली। रामलाल आनंद कॉलेज व भारतीय अनुवाद परिषद के तत्वावधान में आयोजित त्रैमासिक अनुवाद पाठ्यक्रम का 9 अप्रैल 2019 को समापन हो गया। पाठ्यक्रम के अंतिम दिन हुए समारोह में विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय अनुवाद परिषद के निदेशक प्रो.पूरन चंद टंडन मौजूद रहे। उन्होंने कहा रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद की बहुत बड़ी भूमिका है। मौजूदा समय में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जिसमें अनुवाद की जरूरत न पड़ती हो।

प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने कहा हिंदी पढ़ना, लिखना व सोचना बहुत महत्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम की संयोजक डॉ. नीलम ऋषिकल्प ने कहा विद्यार्थी ही शिक्षकों के प्राण होते हैं। इस पाठ्यक्रम में हिंदी विषय के विद्यार्थियों को रोजगार के अनेकों अवसर मिल सकते हैं। पाठ्यक्रम में अलग–अलग कॉलेजों के छात्रों ने दाखिला लिया था।

विद्यार्थियों ने जाना, कैसे बनाएं फिल्मों में भविष्य

प्रज्ञा सैनी

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की ओर से फिल्म समझने, सराहने और निर्माण की कला के विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें वक्ता के तौर पर फिल्म निर्देशक पंकज सक्सेना व फिल्म लेखक मनीष भारद्वाज शामिल हुए।

संगोष्ठी का उद्देश्य विद्यार्थियों को फिल्म देखने का नज़रिया और फिल्म की प्रशंसा की जरूरत एवं निर्माण के विभिन्न चरणों से अवगत कराना था। पारस्परिक विचार–विमर्श के माध्यम से वक्ताओं ने विद्यार्थियों को समझाया कि हमें फिल्मों को केवल मनोरंजन के नज़रिए से नहीं बल्कि उसकी प्रकृति संदेश और फिल्म निर्माण करते समय उसमें की गई मेहनत व रचनात्मकता को भी समझना चाहिए।

हिंदी पत्रकारिता

वक्ता पंकज सक्सेना ने विद्यार्थियों को बताया कि वह किस तरह से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में अपना भविष्य बना सकते हैं। उन्होंने बताया कि सिनेमा के तीन स्तंभ होते हैं–तस्वीर, ध्वनियां और अनुशासन। अपने वक्तव्य में उन्होंने यह भी कहा कि यह दशक ऑडियो विजुअल मीडिया का है। उन्होंने विद्यार्थियों से बात करते हुए कई छोटे–छोटे वृत्तचित्रों को दिखाया। साथ ही उनसे उन वृत्तचित्रों की खूबियों और कमियों को जानने–समझने पर विस्तार से बात की।

वक्ता मनीष भारद्वाज ने बताया कि फिल्म निर्माण किस तरह से और कितने चरणों से होकर गुजरता है। उनका कहना था कि फिल्मों में जाने के लिए सबसे बेहतरीन एक्टिंग आनी जरूरी है। संगोष्ठी में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, संयोजक डॉ. राकेश कुमार, डॉ. अटल तिवारी, डॉ. श्वेता, डॉ. प्रदीप कुमार आदि मौजूद रहे। साथ ही महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लेकर इस संगोष्ठी को सफल बनाया।

प्रेसिडेंशियल डिबेट में मुद्दों की बौछार

सृष्टि बहुगुणा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 10 सितम्बर 2018 को कॉलेज परिसर में प्रेसिडेंशियल डिबेट में अनेक उम्मीदवार सामने आये और आरोप प्रत्यारोप का दौर भी देखने को मिला। उम्मीदवारों ने अपने विचार साझा करने के साथ–साथ अपने मुद्दे बताये और छात्रसंघ यूनियन में आकर काम करने का आश्वासन दिया।

महाविद्यालय के अध्यक्ष के पद के लिए दो उम्मीदवार सामने आये, जिनमें एक इम्बेसात हुसैन हैं जो कि पिछले वर्ष यूनियन में केंद्रीय पार्षद के पद पर कार्य कर चुके हैं एवं इस वर्ष वे अध्यक्ष के पद के उम्मीदवार हैं।

इम्बेसात ने बताया कि पिछले वर्ष यूनियन में आकर उन्होंने सबसे पहले महाविद्यालय के बोर्ड को सही करवाया। उस पर लिखा महाविद्यालय को सही करवाया। कैंपस के ग्राउंड में सभी विभागों के छात्रों के लिए इंटर्नशिप कार्यशाला करवाई जो आज तक के इतिहास में कभी नहीं हुई थी। इसी के साथ इको फ्रेंडली कैम्पेन की बात सहित कुछ अन्य मुद्दों को बताते हुए अपनी बात समाप्त की। साथ विद्यार्थियों से चुनाव में समर्थन मांगा।

अध्यक्ष पद के दूसरे उम्मीदवार उत्कर्ष शर्मा ने 'कीचड़ उछाल ली–कीचड़ उछाल ली' शब्दों से शुरुआत करते हुए कहा कि शिक्षा का बजट लगातार खत्म होता जा रहा है और शिक्षा को निजीकरण की ओर धकेला जा रहा है। उन्होंने कहा कि अध्यक्ष की पावर गुंडागर्दी या पैसों से नहीं बल्कि उनके काम से तौली जानी चाहिए। इसी के साथ कुछ और बातों के साथ उन्होंने अपने मुद्दे गिनवाए और यूनियन में आकर काम करने की बात सामने रखी, जिसके लिए विद्यार्थियों से वोट और सपोर्ट करने की बात कही।

उपाध्यक्ष पद की प्रत्याशी मिनाली

छात्रसंघ चुनाव

गुप्ता ने अपने भाषण में कहा कि कद भले ही छोटा है लेकिन हमेशा अपने कद को बड़ा देखती हूँ। मिनाली ने कहा कि छात्र हित के लिए हर साल एक टूर बनाया जाना चाहिए जिसमें छात्र–छात्राओं को किसी ऐसे जगह पे ले जाना चाहिए जहां उन्हें व्यावहारिक जानकारी प्राप्त हो सके।

उपाध्यक्ष पद की दूसरी उम्मीदवार सौम्या शुक्ला ने अपने भाषण में कहा मैं राजनीति विज्ञान की छात्रा तो ज़रूर हूँ लेकिन राजनीति के नाम पर मुझे मीठी मीठी गोलियां देना नहीं आता। इसलिए आप लोग सोच–समझ कर वोट करिएगा।

सचिव पद के उम्मीदवार आशुतोष मिश्रा ने अपने भाषण में कहा कि सचिव के पद की ताकत उसकी कलम से पहचानी जाती है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि सचिव के पद पर किसी ऐसे उम्मीदवार को चुनें जो शब्दों के वार ही नहीं बल्कि कलम की तलवार चलाना भी जानता हो। इसी तरह अलग–अलग पदों के उम्मीदवारों ने अपने–अपने मुद्दे गिनवाए। सभी का तरीका अलग–अलग था, लेकिन मुद्दे लगभग एक से थे।

मुख्य मुद्दे– महाविद्यालय के प्रांगण का प्रतिपालन, पीने के पानी का परीक्षण, पत्रकारिता विभाग की लैब में सुधार, हर विभाग का सेमिनार और साथ में हाज़िरी, लाइब्रेरी में सभी विभागों की पूरी किताबें, डिजिटल कक्षाओं की शुरुआत, सुरक्षा संबंधी व्यवस्थायें एवं साफ सफाई आदि अन्य मुद्दे उठाये गए एवं यूनियन में आने के बाद इन मुद्दों पर काम करने का आश्वासन दिया गया। आयोजन की शुरुआत इतिहास विभाग के शिक्षक डॉ राकेश कुमार ने की। उन्होंने सभी प्रत्याशियों को प्रोत्साहित किया। उम्मीदवारों ने अपना भाषण दिया और मुद्दे गिनवाएं एवं अंत में नारेबाजी के साथ विद्यार्थियों ने अपने प्रत्याशियों को प्रोत्साहन किया और कैंपस में नारेबाजी की।

आरएलए समाचार
संरक्षक मंडल
प्राचार्य
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
डॉ. अर्चना गौड़
संयोजक
डॉ. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
दीपक कुमार त्रिवेदी
उप–संपादक
मानसी बिष्ट
संपादकीय सहयोग
आभा कुमारी